ग्यारह मुहर्रम

ग्यारहवीं माहे अज़ा को हुक्में इब्ने साद से
अपने मक़तूलों के लाशे फौज वालों ने चुने

और इकट्ठा करके दफ़नाया उन्हें पढ़कर नमाज़
पर नबी ज़ादों के लाशे धूप में जलते रहे

अपने कुशतों को श़की दफ़ना के जब फारिग हुए
लाए बेमहमिल शुतर अहले हरम के वास्ते

और बग़ैरे मक़ना व चादर किया सब को सवार
तौक़ पहनाया गले मंे आबिदे दिलगीर के

सय्यदे सज्जाद के चेहरे का रंग उड़ता हुआ
देखकर ज़ैनब यह बोलीं आबिदे दिलगीर से

है यह क्या हालत तुम्हारी दिल को समझाओ ज़रा
वारिसों में अब तुम्हीं बाक़ी हो हम सब के लिए

सबर मैं क्योंकर करूँ आबिद ने ज़ैनब से कहा
अपने मक़तूलों के लाशे दफ्न उन्होंने कर दिए

पर मेरे बाबा की उरयाँ लाश है रन में पड़ी
देखूँ किन आँखों से जलती धूप में तपते हुए

बीबियों में हश्र था ऐ 'फिक्र' लाशे देखकर
पर शक़ी क़ैदी बना कर सूए कूफ़ा ले गए